रामलोचन ठाकुरक बहुचर्चित कविता पोथी

इतिहासहंता

किछु विचार

* पढ़ि कऽ बड़ खुशी भेल। परम्परा के ओढ़नहु अहाँ 'परम्परा' सँ ततेक फराक बूझि पड़ैत छी जे लगैत अछि कोनो पुरान पीपर-पाकड़ि मे नव-नव लाल-लाल पल्लव लगल होए। की कहऽ चाहैत छिऐ से ततेक महत्वक नहि बूझल, जतेक कहबाक नव ढंग आ स्थापना। आशा अछि, एहिना अहाँक स्वर सँ मैथिलीक मंदिर आंदोलित होयत रहत। —आरसी प्रसाद सिंह

* "इतिहासहंता"……रामलोचन जी विद्रोहक कवि छथि। ओ सत्ताक विरोध कें कविताक मुख्य विषय मानैत छथि। "इतिहासहंता" पुरनका पीढ़ी कें उपराग दैत अछि। ओहि सँ ओ जुड़ल तँ अछि आ ओकरा सङ अपन "नोट ऑफ डिस्टेंट" दैत अछि। कवि रामलोचन ठाकुर एकटा सर्वहारा भाषा शैलीक प्रणेता सेहो छथि जे अनेक मैथिली पत्रिका मे एखनो प्रचलित अछि।…… रामलोचन जी युवा कवि सभ मे सभसँ फराक एकटा हस्ताक्षर छथि जनिक स्वर स्पष्ट आ द्वन्द्वमुक्त अछि। समकालिन साहित्य मे ओ अपन फराक स्थान बना लेने छथि। —जीवकान्त

* ……सोहहो कविता कें पढ़ि अहाँ केर रचनात्मक प्रौढ़ता, राजनीतिक प्रति व्यंगात्मक दृष्टिकोण आओर महानगर बोध सँ प्रभावित भेलहुँ। 'अग्रजक नाम' कविता सन नीक रचना लिखऽक लेल हमर साधुवाद।……"इतिहासहंता" क प्रकाशन १९७७ कें कविताक क्षेत्र मे उपलब्धि वर्ष बना देलकेक।

—कीर्ति नारायण मिश्र

* हमरा बड़ नीक लागल। अहाँ जे वस्तु कविता मे कहऽ चाहैत छियैक से स्पष्ट अछि। मैथिलीक अधिकांश कविता जकाँ दुरुह नहि।—महेन्द्र मलंगिया

* पोथीक रूप मे अपनेक अग्निवाण सभ देखि, पढ़ि बड़ आनन्द भेल। कविता सभ बजैत दस्तावेज अछि। —धनचक्र

* हमरा 'मैथिली' बड़ नीक लागल—थीम आ' प्रजेन्टेसन, दुनू दिसि सँ। अगिला कविता बड़ आकर्षक आ' परिच्छन्न बुझायल (नाटक, निर्देशक आ एक गोट कविता दय कहैत छी')। पहिल आठ गोट कविता मे सर्वोत्तम लागल 'अग्रजक नाम / हम बिसरि गेल छी'। —नचिकेता

कुमारेश श/२५५

बैतालकथा

(१/८५-[illegible])

बेताल कथा

(हास्य-व्यंग)

कुमारेश काश्यप

विदेह पब्लिकेशन्स, कलकत्ता

प्रकाशक :
विदेह पब्लिकेशन्स,
६१-ए, चारू चन्द्र प्लेस (इस्ट),
कलिकाता-७०० ०३३

पहिल खेप : मइ १९८१
दाम :—चारि टाका

BETAL KATHA
(Maithili Satire)
by : Kumaresh Kashyap

समर्पण

हास्य सम्राट

प्रोफेसर श्री हरिमोहन झा

कें

सादर

—कुमारेश काश्यकप



कथा-क्रम

पूर्व कथ्य

मैथिली आन्दोलनक विसंगति सं उत्पन्न क्षोभ हमरा हास्य-व्यंग लिखबा लेल वाध्य कएलक। 'मिथिला भूमि' मे 'तोता मैना सम्बाद' हास्य स्तंभक हेतु सर्वप्रथम 'अथ कथा इजोतक खाम्ह प्रसंग' लिखि पठाओल। रचना पबिते मिथिला भूमिक सम्पादक 'सोमदेव' भाइक प्रशंसा-प्रोत्साहन भरल पत्र प्राप्त भेल आ जखन रचना छपलैक त तकर आशा सं बेसी प्रतिक्रिया हमरा आगू लिखबाक लेल, लिखैत जेबाक लेल बल देलक। फलतः कएकटा रचना प्रकाशित कराओल।

किछु दिनक बाद कलकत्ता सं 'शिखा' बहार भेलैक। शिखा सम्पादक कुणाल-अग्निपुष्पक आग्रह पर बेताल कथा शीर्षक सं व्यंग लिखल जे प्रकाशित होइत रहलैक आ पाठकक नीक प्रतिक्रिया अबैत रहलैक।

'शिखा' जखन बन्न जकां भ गेलैक त 'अग्नि पत्र' मे व्यंग स्तंभ देबाक विचार भेल परञ्च शिखा सम्पादक लोकनिक आग्रह पर 'बेताल कथा' शीर्षक नहि द 'लालबुझक्कर' देमय पड़ल। दुखक बात जे अग्निपत्र मे सेहो एकेटा रचना प्रकाशित भेलैक कारण 'पत्र' बन्न भ गेलैक।

एहि संकलन मे बानगीक रूप मे एगो तोता मैना सम्बाद आ एगो लाल बुझक्कर द रहल छी। बांकी सभ बेताल कथा।

बेसी रचाना सभ स्वयं कहत।

—कुमारेश काश्यप

अथ कथा चमचा पुराण प्रसंग

सांझक समय। तोता आ मैना चाह पर बैसल। परंच 'टी टेबुल टॉक' क बिनु चाह—कम स कम मैना कें अवस्से फिक्का बुझाइ छलनि। ओ मओन भंग करैत तोता सं पुछलथिन।

—अंय ये तोता? एहि बेर अहाँ जहिया सं मैथिली पत्रिकाक सर्वेक्षण क क फिरलौं तहिया सं एना गुम-सुम किएक भेल रहैत छी? एहि खेप त प्रवासी मैथिल लोकनिक कूनू समाचारों ने कहलौं?

तोता माथ उठा मैना दिस तकलनि आ शान्त स्वरें बजलाह—अहांक चार्ज सवा सतरह आना सत्त अइ। परंच कारण कि छइ जनैत छी? जं गप एक कान सं दू कान भेल तैखन सगरो देश परसबे करत। आ से भेने एकदिस मैथिली-मिथिलाक क्षति होयतैक त दोसर दिस हमरा लोकनिक खोंता बिनु उजारने नहि रहत।

—आखिर एहन गप कून छैक?

—सभ गप एहने छैक। कुनू एक-दू गोट रहितैक तखन ने फुटा क कहितौं। ई त साधारणों आदमी सोचि सकैत अछि जे जखन हल्ला दिन-राति मिथिले-मैथिलीक होयत छैक, तखन कुनू उपलब्धि किएक ने भ रहल छैक?

मैना कें ई गप अनसोहांत लगलनि। ओ प्रतिपादक स्वर मे बजली—से की कहैत छी ये? कुनू उपलब्धि कोना नहि भेलैकए?

बिहार पब्लिक सर्विस कमीशन मे मैथिलीक स्थान, मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना, साहित्य अकादमी मे मैथिली ··

—विद्यापति डाक टीकस, मिथिला एक्प्रेस ··· बीच सं लोकैत तोता बजलाह। कनहा कुकूर मांड़हि तिरपित—कहबी कुनू बेजाय छैक। हम पुछैत छी जे मिथिला विश्वविद्यालय मे अध्ययन-अध्यापन कून भाषा मे होइ छइ? कार्यालयक काज कून भाषा मे होइ छइ? बी०पी० एस०सी०क परीक्षा मे मैथिलीक कते परीक्षार्थी रहैत छथि? कहै छइ किने जे पेट मे खढ़ ने आ सिंग मे तेल। जड़ि के गड़ार खेने जाय आ फुनगी पर पानि ढारब। कते मुसहर धाङरक धीया-पुता बी० पी० एस० सी० क नाम सुनने होयत? कतेक—मिथिलाक जनता कें मिथिला विश्वविद्यालयक साइन बोर्ड सं पेट भरतैक?

—पा भरि तामस त सदिखन अहाँक नाक पर रहिते अछि। जहाँ किछु पुछू त एहिना जबाब। हम पुछैत छी जे एहि सभ लेल कि प्रवासीये मैथिल वा मैथिली पत्र पत्रिकाए दोखी अइ?

—से त हम नहि कहलौं हे। सखन बेसी अबरसे। ओना सभसं बेसी दोखी त राजनैतिक महन्थ सभ आ ओकर चमचा सभ अछि जे सभ अन्न पानि खाएत मिथिलाक आ पहरा करत दिल्ली दरबारक। परंच मैथिली आन्दोलनक नाम पर जे महन्थ सभ अपन-अपन गोटी सुतारि रहल ए आ मैथिली आन्दोलन कें दिगभ्रमित क रहल-ए, एकरा हौआ बना रहल ए तकरो लोकनिक कम दोख त नहि छैक।

—जं एहन बात छैक त एहि नेता लोकनिक वा महन्थे सभक मरम्मति किएक ने करै ए लोकसभ?

चाहक चुस्की आ चौअनिआ मुस्की दैत तोता बजलाह—मरम्मति? नेता वा महन्थवा सभ ओते कांच नहि अइ। अपन क्षमतानुसार सभ चमचा पोसने अइ। ई चमचा सभ महन्थक आदेश पबिते जे कुनू

काज करबा लेल तैयार रहैछ। एकरा दस टा हाथ-पएर छैक जे एकरा लोकनि सं ढूसि लेत?

—अच्छा, एगो बात पुछू।

—एगो किएक, एक पथिया पुछू। एहि मे एते सोचबाक को छैक? हम कि कुनू महन्थ थोड़बे छी?

—तामस त ने करब?

—सत करू की?

—मैना बिहुंसैत माथ डोलओलनि।

—एक सत्त, दोसर सत्त, अहांक पुछला पर जे तामस करय से अस्सी कुण्ड नर्क मे पड़य।

—भेल-भेल। अच्छा ई चमचा शब्द अहां के कतय भेटल? आकि अहींक गढल थिक?

—इएह लियह। एही दुआरे ने कहैत छी जे स्त्रीगण जाति कें भने सरकार राशनकार्डक सीस्टम बना बराबरिक दर्जा द दैक परंच स्त्रीगण रहत स्त्रीगणे। कहू भला! चमचा सन प्राचीन आ पौराणिक शब्द। हं, एमहर प्रचार मे अनबाक श्रेय हमरा देल जा सकैछ।

—प्राचीन आ पौराणिक—एकर अर्थ नहि बुझलौं? आ आर एगो बात, बेर-बेर स्त्रीगण-स्त्रीगण हमरा नहि नीक लगैए से कहि दैत छी।

—बेस महारानी साहिबा—माफ कएल जाय। आब नहि कहब। तोता बेस नाटकीय भंगिमा मे जबाब देलथिन आ से देखि मैना अपन हंसी रोकि नहि सकलीह। ठहाका बन्न भेला पर तोता आरंभ केलनि।

—देखू, चमचा शब्द क बेर-बेर प्रयोग भेल-ए महर्षि व्यास द्वारा, जे अपन सतरह पुराण मे एहि शब्द पर पूर्ण प्रकाश दैतहुं संतुष्ट नहि हेबाक कारणे 'चमचा पुराण' नामे अठारहम पुराण क रचना केलनि। हुनक प्रसिद्ध श्लोक अछि—

अष्टादस पुराणेषु व्यासाज बचनम ध्रुवम।
सर्वकाले सभी क्षेत्रे चमचा सर्वत्र विद्यते।

एहि पुराण में चमचाक वर्गीकरण सेहो कएल गेल अइ। व्यासजीक अनुसार चमचा चारि प्रकारक होइछ —

१) ओ जकरा ज्ञानक छूति नहि रहै छइ, तें महन्थक बात कें ब्रह्मवाक्य मानि ओकर आदेशक पालन करैछ।

२) ओ जकरा थोड़-बहुत ज्ञान रहैत छैक आ तें बाहरक बसात लगने ओकर मन बदलैत छइ, परंच महन्थ लग पहुंचिते सटक सीताराम।

३) ओ जे स्वार्थवस चमचागिरी करैए। एकर पुनि दू गोट उपभाग छइ —

क) ओ जकरा महन्थ कुनू पद पर बैसा दैत छैक आ ओकरे कान्ह पर बन्दूक राखि अपन दाव सुतारैए।

ख) ओ जे वास्तव मे अपनो काज सुतारि लैछ — जेना कहियो नाटकक नपुंसक नायक बनि गेल त कहियो महन्थ संपादित कुनू पत्रिका मे दू चारि पांतीक फकड़ा — छपा लेलक। एवम क्रमे कालान्तर मे ओहो महन्थेसन होरी किवा साहित्यकार बनिजाइए।

४) ओ जे फंचारि टाइपक होइए। कहियोकाल सभा सोसाइटी मे बाजिलेत — महन्थक विरुद्ध हिजरा विद्रोह करत परंच फेर जहिना क तहिना।

—तकर मानें भेल जे चमचा अदौए सं होइत आयल-ए ? मैनाक प्रश्न छलनि।

—ताइ मे कून संदेह। रामायण काल मे महाराज रामक दरबार चमचा सं भरल छल। हनुमानजी प्रधान चमचा छलाह। महाभारत काल मे पाण्डव पांचो भांइ किसुन गोसांइक चमचा छलाह। देवता लोकनिक

चमचा नारद विश्व विख्याते छथि। महाराज इन्द्रक चमचा मे खाली स्त्रीगणे छथि।

—परंच वर्तमान समय मे एहि चमचाक संख्या त बेसी नहि हेबाक चाही ? आ तखन एकर शक्तिये की ?

अठनियां मुस्की दैत तोता कहलथिन—

संख्या पुछैत छी ? अनगिनत। मैथिली संस्था वा पत्रिका सं ल कें देशक शासक हो वा विरोधी दल, सभ ठाम एकर भरमार छैक। देशी-विदेशी महन्थ द्वारा चालित ई एगो विशाल वर्ग अइ। रहल गप शक्तिक से मैथिलीक क्षेत्र मे ई चमचा सभ हिजरा आन्दोलन करैए आ महन्थक गुणगान मे गीत-लेखादि लिखैए। सुनबे त कएल जे मैथिलीक सपूत लोकनि कें सरकारी गुन्डा लाठी सं कपार फोड़ि देलक परंच एगो स्वनामधन्य मैथिली सेवी संस्था तकर निन्दा-प्रस्तावो ने पास क सकल। देशक स्तर पर — कागज पर 'गरीबी हटाउ' आन्दोलन आ व्यवहार मे 'शान्ति रक्षार्थ गोली चलाउ आन्दोलन करैए। भाषण मे जनतंत्रक ढोल पीटत परंच कार्यतः जनताक कंठ मोकैए.......

—बाप रे! ६ बाजि गेलै। घड़ी देखैत मैना चिचिएली।

—की भेल !!

—हैत कि कप्पार! ६ बाजि गेलैक। 'शो'क टाइम।

—धत्तेरी के। हमरा त एकदमे ने मन छल। अहां जल्दी सं तैयार भ जाउ, हम ता रिक्सा देखै छी। एहि प्रकरण के आइ एहीठाम शेष कएल जाय दोसर दिन समय देखि आगा कहब। की विचार ?

—विचारे-विचार। एखन जल्दी करू। रिक्सा बजाउ।

—'बेस' कहैत तोता उठलाह आ आजुक बैसार एहीठाम उसरि गेल।

विद्यापतिक बर्खी

लाल बुझक्कर जखन सभागार मे प्रवेश केलनि तखन कार्यक्रम आरंभ भ गेल रहैक। सभागार लोक सं ठसाठस भरल। चुट्टी ससरक दर नहि। तें बेचारे एक कात मे दबकि कें ठाढ़ भ गेलाह। परंच महा-पंडित तर्क शिरोमणि गोनू झा क नजरि भरिसक हिनके बाट हेरैत छल। नक्के टिया संगी छलथिन आ तें एहि बेर भेंट हेबे करतनि ताही विश्वासक संग ओ महानगरक यात्रा कयने छलाह। नजरि परिते ओ इसारा सं मंचपर पहुंचबाक संकेत केलथिन। इच्छा त लाल बुझक्कर के सेहो छलनि परंच छलाह ओ स्थानीय लोक—माने बारीक पाटु आ तें लोक अन्यथा व्यवहार नहि क बैसनि से सोचि ठामक ठामहि रहि गेलाह - मन मसोसि कें। ओमहर गोनू बाबू प्रधान अतिथिक आसन पर रहबाक कारणे उठि ने सकैत छलाह। दुनू एक दोसर कें देखैत टा रहलाह।

भाषणक कार्य-क्रम युद्धस्तर पर चलि रहल छलैक आ पते ने चलैत छलैक जे ई क्रम शेषो होयतैक। दर्शक हाफी करैत छल। केओ केओ झपकी मारैत छल, ता गोनू बाबूक नामक घोषणा भेलनि आ लोक सचेतन भेल।

गोनू बाबू नोसिदानी सं भरि चुटकी नोसि बहार कय नाकक दुनू पूरा कें जाम करैत उठलाह आ कात मे राखल, फूल-माला सं झांपल कविपति विद्यापति क फोटो कें नमस्कार निवेदित करैत बजलाह—बन्धुगण ! अहां लोकनि जनिते छी जे हमरा सातमो किलासक साटो पोकट नहि अइ आ

एहि मंचपर एक सं एक जरदगव विद्वान-बलवान धनवान उपस्थित छथि। ई लोकनि बहुत किछु कहि गेलाह—ए जे हमरा सुनलो-जानल ने छल। तथापि विधि निर्वाह त करै—ए पड़त। हमरा विचारें ई प्रश्ने अनर्गल थिक जे विद्यापति तीन गो देबी-देबता कें पूजैत छला वा पाँच गो कें। सभ केओ जनैत छी जे मिथिला मे पैघ लोक उएह कहबैत छल, आ एखनो कहबैत अछि, जे सभ कथ मे आगू हो। जेना बेशी बिबाह होइक, बेसी धोया-पुता होइक, बेसी धन सम्पति होइक, बेसी टंट घंट करय, बेसी गप हांकय, बेसी खाय। कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे सभ किछु बेसी हेबाक चाही, कम नहि। आ पैघ हेबाक वा कहेबाक सेहन्ता ककरा ने होयत छैक। विद्यापति सेहो मनुक्खे छलाह आ तें हुनको ई सेहन्ता अबस्से छल होयतनि। तें हमरा जनतबे ओ छप्पन कोटि देवी-देबताक पूजा करैत छल होयताह। ई त हुनक किवां हमरा लोकनिक—सौभाग्य जे कहो जे समाजक ठेकेदार पैघ-छोटक बही लिखनिहार बनियां सभ हुनक नाम तथा कथित पैघ लोकक पांती मे नहि घुसिया देलकनि। आ एकर कारण हमरा जनैत एकेटा छैक जे ओ एकगो बियाह केने रहथि। ओना हम पहिनहि कहि चुकल छी जे हम कुनू अधिकारी विद्वान त छी नहि। भ सकैए कालिह केओ शोध क कें प्रमाणित क देथि जे विद्यापति कें एक सै एकैस बियाह छलनि, जेना कि कएकटा नब बात आइ सुनबा मे आयल—ए।

हमरा जनतबे ओ छलाह सुबा मैथिल। मैथिल सभ्यता-संस्कृतिक अनन्य उपासक। प्रमाण स्वरूप हुनक धीया पुताक नाम कें लेल जा सकैछ जे हरपति, नरपति, वाचस्पति आ दुल्लहि छलनि। आजुक फोर-फिगर पबैबला तथाकथित प्रबुद्ध मैथिल जकां ओ पाश्चात्य सत्यताक 'इमिटेशन' नहि छलाह ने त हुनको धीया पुताक नाम पप्पू, डब्बूक, चिप्पी, टिक्कू, पॉली, डॉली आदि रहितनि। हुनको धीया-

पुता माँ के मामी आ पितिआइन के आंठी कहितथिन। 'दुल्लहि कतय गेली तोर माय, कहहुन आबथु आव नहाय' क बदला ओ कहितथिन डॉली तेरी मामी कहां है, बोलो बाथरूम से हो आय।

त से जे कहैत छलौं, ओ सुच्चा मैथिल छलाह आ तें माछ-माउस आ मधुरक प्रेमी छलाह आ तें छलाह रसीक। माछ-माउस नहि खेनि हार क रचना ओतेक रसगर भइए ने सकैछ। दोसर ओ कुनू होटल-बार एटेन्ड नहि करैत छलाह अपितु सुच्चा मैथिल जकां अपन जातीय पेय भाङ पीबैत छलाह आ सेहो अपने ओतय बनबा कें। के नहि जनैछ जे भाङ बनेवा मे स्पेशलिस्ट' हेबाक कारणे ओ उगन खवास कें ओतेक मानैत छलथिन आ ओकरा पर कहियो कनियो तामस नहि केलथिन। भाङक हेतु दूधक प्रयोजन होइते छैक। हुनक 'मिल्क सप्लायर' छलथिन कृष्णचन्द्र यादव जे इमानदार छलाह आ दूध मे मिखियोभरि पानि नहि मिलबैत छलाह। स्वभावतः विद्यापतिक बेसो रचना उगन खवास आ कृष्णचन्द्र यादवक चारूकात चकभाउर दै ए। ओना एहि विषय पर हमर मीता लाल बुझक्कर विशेष कहि सकैत छथि आ हम आशा करब जे ओ अपन कविता पाठ सं पहिने दू-चारि आखर अवस्से कहता। हम एतबे कहि शेष करैत छी। जय मैथिली

सभागार मे थपड़ी गड़गड़ा उठल आ वातावरण शान्त भेलाक बाद कविता पाठ आरंभ भेल। पहिने दू-चारि गो टुटपुजिया कविक कविता भेल आ तकर बाद 'एनाउन्स' भेल लाल बुझक्कर-क नाम। ओ अपन 'साइड बैग' झुलबैत मंच पर प्रहुंचलाह आ माइक पर खखास करैत आरंभ केलनि।

भाइ सभ! ओना हमरा कविता पाठक आदेश भेटल-ए परंच गोनू बाबूक आग्रह आ पूर्वक विद्वान वक्ता लोकनिक नव-नव खोज सं प्रभावित भ हम दू-चारि शब्द बाजि रहल छी, फेर कविता पढ़ब।

अपने लोकनि विद्वान अध्यक्षक मुहें सुनि चुकल छी जे आइ हमरा लोकनिक हेतु अपार हर्खक दिन थिक कारण अजुके दिन हमरा सभक सभ स पैघ लेखक 'कविपति' विद्यापति 'सर्गवासी' भेल छलाह। ओना हम कहब जे ओ दिन हमरा लोकनिक लेल डबल अपार हर्षक होयत जाइदिन एके संग मिथिलाक समस्त 'कवि' सर्गवासी भ जेताह। 'कवि' लोकनिक लेल सेहो 'सर्गवासी' भ गेनाइ लाभकर होयतनि, कारण तखन हुनको लोकनिक चर्च हेतनि, बर्खी मनाओल जेतनि, ओहो लोकनि सोधल जेताह।

आजुक मैथिल जाति भूत जीवी आ भूत प्रेमी थिक, ओकरा वर्तमान आ भविष्य सं कुनू समन्ध-सरोकार नहि छैक। दोसर बात जेना कि अध्यक्ष महोदय बजलाह-ए, ई अहां लोकनिक लेल 'सोहागक' बात थिक जे आजुक मंच पर तीन-तीन गोट विद्यापति विशेषज्ञ उपस्थित छथि। ई तीनू विद्वान—डा० गोबर गणेश गोइत, जिनका हाले मे 'विद्यापतिक नायिकाक नुआ' पर शोध करै लेल पीएच०डी० क सम्मानोपाधि देल गेलनि-हें, डा० झांखुर झा, जिनका 'विद्यापतिक नायिकाक चूड़ी' पर शोध करैक उपलक्ष्य मे पीएच० डी० भेटलनिहें तथा डा० खेसारी खवास, जिनका 'विद्यापतिक नायिकाक आंगी' पर शोध करैक उपलक्ष्य मे पीएच० डी० प्राप्त भेलनि हें, अपन विद्वताक परिचय द ए चुकल छथि। ओना हम कुनू अधिकारी विद्वान नहि छी कारण हमरो कुनू सिंग नाङड़ि, जेना नामक आगा प्रोफेसर-डाक्टर आ पाछा पीएच०डी० डि०लिट०, नहि अइ। तथापि हमरा बुझने हिनका लोकनिक शोध मे कमी रहि गेल छनि। जेना कि ध लेल जाओ, डा० गोइत नाना-रंगक नुआक चर्च केलनिहें परंच ओ ई नहि कहलनि जे विद्यापतिक नायिका सदा नुआए पहिरैत छलथिन बा कहियो काल—जेना कुनू पार्टी बा क्लब एटेंड करबाक समय मिनी-मैक्सी, बेल-बट सेहो? डा० झा जे चूड़ीक चर्च केलनिहें ताइमे लहठीक चर्च नहि छल। संगहि ओ इहो स्पष्ट नहि केलनि जे

विद्यापतिक नायिका दुनू हाथ में चूड़ी पहिरैत छलथिन कि एक हाथ मे। जं एक हाथ में पहिरैत छलथिन त बामा मे ने कि दहिना मे।

हमरा मनमे ई सभ प्रश्न जगनाइ स्वाभाविक अइ आ हम आशा करैत छी जे अपनो लोकनिक मन मे एहन प्रश्न अवस्से उठल होयत। तकर कारण जे ओ घड़ी त अवस्से बन्हैत छल हेती—से भने बामा मे वा दाहिना हाथ मे बान्हथु आ तें घड़ीक शोभा निखारै लेल ओ हाथ चूड़ी मुक्त रहवाक चाही। घड़ी जं ओ पहिरैत छलीह ताइ मे कुनू संदेह नहि हेबाक चाही कारण जखन कहियो होटल वा पार्क मे हुनका नायकक संग 'एपोआन्टमेंट रहनि-ओ सदा-सर्वदा उचित समय पर पहुंचि जाथि:। तहिना डा० खवास आंगीक विवरण दैत काल 'ब्रा' क चर्च नहि केलनिहें। हमरा जनैत विद्यापतिक नायिका ने त हिप्पीन छलथिन आने भरदुलाहि जे बिनु 'ब्राक' क रहितथि। तें जं डा० खवास आंगी सं मात्र ब्लाउजक अर्थ लेने होथि त 'ब्रा' पर फराक सं शोध हेबाक चाही कारण 'ब्रा' क स्थान आंगी स पहिने छैक। तहिना 'साया' पर सेहो शोध हेबाक चाही। हमरा जनैत उपरोक्त तीनू विद्वान कें विद्यापति विशेषज्ञ नहि कहि जं विद्यापतिक नायिकाक क्रमशः नुआ, चूड़ी आ आंगी विशेषज्ञ—कहल जाय तं बेसी उपयुक्त होयत।

असल मे बाबा विद्यापति पर बड़ बेसी शोध भेल—ए परंच ते यो ओ नोक जकां सोधायल नहि छथि। सत्त पूछी त विद्यापति भेलाह बैतरनी नदीक गाय—नाङड़ि पकड़ू आ पार भ जाउ। प्रयोजन छैक डाकडर बनबाक अभिलाषी लोकक। अखनो बहुत विषय बांकी छैक जेना कि ध लियह विद्यापतिक नायिकाक केश श्रृंगार। ओ खोपा बन्है छली ने कि जुट्टी गुहबै छली वा बाब्ड कट रखैत छलीह? आ तेहना हालत मे कून 'ब्यूटी पारलर' मे जाइत छलीह? तेल लैत छलीह वा सेम्पू करैत छलीह? कून सेम्पू करैत छलीह? क्लिनिक ने एग नेकि

लेमन। आर विषय सभ छैक—नेल पालिस काजर वा सुरमा, स्नो पाउडर, लिपस्टिक, टिकुली सटैत छलीह आ कि ड्रेसक संग मैच करैत श्रृंगार-ठोप करैत छलीह? भौंह चौरा छलनि ने कि एन्फ्रेंचक सहायता सं ओकरा पातर करैत छलीह? विद्यापति लिखने छथि भौंह निरेखल आंखि'। परंपरानुसार पान खाइ छलीह ने आधुनिकासन सिगरेट पीबैत छलीह? पान खाइत छलीह त मीठा ने जर्दा? सिगरेटक कून ब्रान्ड छलनि? जुत्ता कून कम्पनीक आ केहन पहिरैत छलीह? बाटा ने कि फ्लेक्स? हाइहील ने कि साधारण। गोदना गोदओने छलीह कि नहि, कब्जीपर नायकक नाम छलनि कि नहि? विद्यापतिक नायिकाक गहनापर विशाल शोधग्रंथ तैयार भ सकैछ। जेना कि ओ पुरना सूति-पाति, कांड़ा-छाड़ा पहिरैत छलीह, :कान मे ढेला वा मकड़ी छलनि आ ने वर्तमानक बाली वा कुंडल? गहना खांटी सोनक छलनि ने कि 'इमिटेशन', कारण अभिसार मे जाइते छलीह आ तें चोरि-बटमारिक भय स्वाभाविके।

एवम् प्रकारे बहुतो विषय छैक जाइपर शोध हेबाक चाही। हम आशा करै छी जे अपने लोकनि हमर विचार सं अवस्से सहमत होएब। हम आर अधिक समय नहि ल एखने किछु घड़ी पहिने एही सभागार मे रचित कविता सुना रहल छी।

लाल बुझक्कर बुझइ गिया कि आर ने बुझा कोइ
पैर मे उखड़ि बान्हि क हरिण चरक्का होइ
हरिण चरक्का होइ लड़क्का बकरी-छागर-हिजरा
बैंकिंग पाबि महाकवि बनइछ बना चाहि-छी फकड़ा
भदवरिया बेंगे सन पीएच० डी० डि० झिंटक पथार
तेलक दाम बढ़ल जाइत छइ बढ़ले जाइ बजार
बढ़ले जाइ बजार हजार-हजारक 'क्यू' छइ
ठोकथु माथ कपार जकर संतानक ऐहने 'भिउ' छइ
लाल बुझक्कर बुझइ गिया कि आर न बुझा कोइ
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक रक्षा दैवे शक होइ।

———

कुर्सी महात्म्य

बेचारे राजा विक्रमादित्यक सिगरेटक पैकेट प्रायः खाली भ गेल छलनि आ पैर सेहो भरिया गेल छलनि। ओ असोथकित भ कें गाछक जड़ि मे बैसि रहलाह। तैखन लिकेष्टरक शब्द कान मे पड़लनि त चेहरा प्रसन्न भ गेलनि। श्रीमान बेताल राज आबि गाछक दुकन्हा पर विराजमान भेलाह आ अपन दहिना हाथ मे बान्हल शीको घड़ी देखैत बजलाह—हमरा कने बिलम्ब भेल ने !

—कुनू बात ने। आबि गेलौं ने। हमरा त चिन्ता सं मथदुक्खी पकड़ि लेने छल। महाराज विक्रमादित्य शान्त स्वरें बजलाह। बेतालराज कें हंसी लागि गेलनि। ओ हंसिते बजलाह—चिन्ता ! आ महाराज विक्रमादित्य कें ? हाउ फन्नी !

—अपने की बुझबै श्रीमान् बेतालराज। देश आ देशवासीक चिन्ता सं हमरा भरि-भरि राति नीन्न नहि होइए।

बेतालराज अचरज प्रकट करैत बजलाह—नव गप कहल महाराज। अरे देश आ देशवासीक दुखक कथा त राजा-महाराजा क मुहें तक सीमित रहैत छैक, हृदय मे थोड़बे ?

—अहाँ उनटा अर्थ लेल मीता। हमर कहबाक तात्पर्य छल जे लोक हमर निन्दा-आलोचना करैछ, अपदस्थ करबाक नेयार-भास करै-ए।

—ओ ! आब बुझ ने। आखिर तकर कारण ?

—कारण ? हे ……ओ दक्षिनबारी कात जंगल देखैत छी ने, ओइ

मे एगो टिल्हा छइ। से हे मित्रवर, जखन कहियो चरबाह सभक बीच झगड़ा होइत छइ त एगो दुसाधक ननकिड़बा ओइ पर बैसि—जेना कुन राजा राजसिंहासन पर बैसल हो—झगड़ाक तसफिया करैए। आ से एतेक नीक जे बुझि लियह दूधक दूध आ पानिक पानि। आब त सुनै छी जे कात करोटक गाम सं सेहो लोक सभ आपसी झगड़ाक तसफिया करैबा लेल ओतै पहुंचैए। एमहर हमर विसाल न्यायालय भम्ह पड़ि रहल ए। ओइ बीत भरिक छौंड़ाक गुणगान चारूकात भ रहल छैक।

बेताल राज गंभीर होइत बजलाह—बेस सरिपहुं सिरियस बूझना जाइछ। ओ अपन चुरुट लेसलनि आ किछु सोचि आगा बढ़लाह—परंच हसरा अछैत तोरा चिन्ता करबाक प्रयोजन नहि। हम एइखन तकर कारण निराकरण कहि रहल छी, ध्यान सं सुनह।

महाराज विक्रमादित्य कने आश्वस्त भेलाह आ जेबी सं 'केली-क्लोथ' क बड़का रूमाल बहार क कपारक घाम पोछलनि आ फेर ५५५ बहार क एगो सिगरेट चाइनीज लाइटर सं लेसलनि।

बेतालराज कथा आरंभ केलनि—हे राजन ! अहां के ज्ञाते होएत जे डा० नास, एम०ए० (त्रय), पीएच० डी०, डी०लिट० कुल अठारह गोट पुराणक रचना केने छथि। एहि मे अन्तिम सं पहिलुक परंच सबसं प्रमुख पुराण थिक 'कुर्सी-पुराण'। आने पुराण सभ जकां एहू मे कतेको अध्याय छैक आ विभिन्न अध्याय मे विभिन्न बिभागीय प्रधानक कुर्सीक कथा-गाथा बड़ सहज आ सुन्नर ढंग सं वर्णित छैक। उदाहरण स्वरूप-विरोधी दलक नेताक कुर्सी, श्रमिक संघक नेताक कुर्सी, सम्पादकक कुर्सी, उपाचार्यक कुर्सी, फिल्म निर्देशकक कुर्सी अछि। एहि पुराणक अन्तिम अध्याय जे सभ सं महत्वपूर्ण अइ ताइ मे जाइ कुर्सीक कथा छैक से कुर्सी मे आन सभ कुर्सीक शक्ति आ गुण सन्निहित छैक। एहि कुर्सी पर जे बैसत से राता-राती विश्वक महान नेता, अभिनेता, युगचेता, बुद्धिमान, विद्वान, धनबान, बलबान, लेखक, चिन्तक, आइनज्ञ, मानवदर्दी, शान्तिदूत, धर्मात्मा,

महात्मा बनि जायत, भलहि ओ एहि सं पूर्व लुच्छा लफंगा-चोर-बदमास आ निरक्षर भट्टाचार्य किएक ने रहल हो, अथवा मनुक्खक बदला गदहे किएक ने ओइ पर बैसि जाय। ओकर मुखारबिन्द सं निस्सरित एक-एक बात लोक कें सूत्रवाक्य सन नीक लगतैक आ सभ आंखि मूनि क ओकर पालन करत।

एतबा सुनिते महाराज विक्रमादित्यक मुंह सं एक लोइया लेर चुबि गेलनि जे बेताल लक्ष्य केलथिन आ कथा कें आगू बढ़ओलनि—से हे राजन ! एही कुर्सी पर कहियो राम बैसल छलाह, कृष्ण बैसल छलाह। ई वास्तव मे ओइ कुर्सीक महत्व छैक जे साधारण लोक होइतहुं राम आ कृष्ण देवता बनि गेलाह आ सब ठाम पूजित होमय लगलाह। आ सएह कुर्सी ओइ दिल्हातर छैक।

बेतालराज शेषो ने केने छलाह कि महाराज विक्रमादित्य फुरफुरा कें उठलाह। बेताल रोकैत कहलथिन—अगुतेने काज नहि होइ छैक 'योर हाइनेस'। आखिर ओकरा प्राप्त करबाक सूत्र त जानि लेल जाओ। अन्यथा अपने जंगल कोरलाक पश्चातो ओकर नाम-निसान नहि देखि सकैत छी।

महाराज लुद द बैसि गेलाह आ पुछलथिन—तखन कोना भेटतै से कने जल्दी कह ने।

सुनल जाय। ओइ कुर्सी कें एक मात्र साधारण जनताए प्राप्त क सकैछ जे मन सं स्वच्छ, तन सं परिश्रमी हो आ देशभक्त हो।

परंच से सभ त हमरा विरोध मे अइ। व्यग्रताक संग विक्रमादित्य बजलाह।

जनैत छी। तोरा लग किछु चमचा त छह ने। ओकरा सभ कें देशक विभिन्न स्तरक जनताक भेष मे सजा कें पठाबह। ओ लोकनि तोहर नाम कीर्तन करैत जायत आ कुर्सी कें कोरि क आनत आ फेर उएह सभ ताइ पर तोरा प्रतिष्ठापित करत। आर सुनह। ओइ कुर्सी पर बैसलाक बाद तोरा किछु नियम-कानून पालन करय पड़तह। जेना सत्य नहि बाजो

दिवारात्रि देव आ देशवासीक चर्च करी आ घरियाल जकां नोर बहाबी परंच कार्यतः स्वजन पोषण करी, मात्र भाषणकाल देश-भाषाक व्यवहार करी, परिधान विश्वक संग सामंजस्य रखैत हो, विरोधीक गन्ध पबिते ओकरा समूल नष्ट करी, किछु दरबारी चमचा कें छोड़ि समस्त देशवासी के सतत कष्ट मे राखी, प्रयोजनी वस्तु-जातक दाम आकाश छुबैत रहय आ कखनो-कखनो बजार सं आलोपित भ जाय बेकारी दिनानुदिन बढ़ैत रहय आ सेनाक संख्या मे सभदिन बढ़ोत्तरी हेबाक चाही, सतत देश पर बहरिया आक्रमणक बात प्रचारित करैत रही, देशक विभिन्न जाति आ धर्मक बीच झगड़ा बझेबाक प्रयास हो। आ एहि सभ काजक लेल प्रचुर मात्रा मे चमचा प्रोडक्सन हो। आर कतेरास बात छैक जे तोरा ओ कुर्सी स्वयं सिखा देतह। आ एहि तरहें तों विश्वक महान लोक बनि जेबह, मरि कें अमर बनि जेबह।

अच्छा मीता ! एहन कुनू उपाय त कहह जाइ सं हमरा बाद ओ कुर्सी नष्ट भ जाय आ फेर ओइ पर केओ बैसि नहि सकय।

आइ यम सॅड़ी डीयर, रियली वेरी सॅड़ी। सरिपहुं एहन कुनू द्वारा नहि छैक। असल मे ई कुर्सी थिक अभिशापित। तोरा बैसलाक कारणे ई विक्रमादित्यक हिंसासनक नामे जानल जायत। तोरा मरिते ई अलोपित भ जायत आ फेर बीसम शताब्दीक उत्तरार्ध मे जम्बूद्वीपक भारत खंडक हस्तिनापुर मे, जेकि तखन दिल्लीक नाम सं विख्यात रहत, प्रकट होएत, तखन प्रजातंत्रक प्राधान्य रहतैक आ तें ई प्रधान मंत्रीक कुर्सीक नामे ख्यात होएत।

एतबा कहि बेताल राज अपन हेलिकेप्टर मे बैसि आकाश मार्ग सं विदा भ गेलाह। महाराज विक्रमादित्य बेल-बॉट क पछिला जेबी सं ककबा बहार कय केश फेरलनि आ एगो सिगरेट लेसि चौयनिया मुस्कीक संग घरमुंहा बिदा भेलाह।

———

बिप्लव

श्रीमान बैताल राजक पैर थम्हका गेलनि। पार्क-लेकादि मे छौंड़ा छौंड़ीक लीला ओ देखि चुकल छलाह, परंच एत्तौ से आरम्भे भ जायत तकर कल्पनो ने केने छलाह। बम्बे डाईंगक प्रिंटक हाइ-कलर कुर्ता आ प्रिन्ट लुंगील परिधान आ बब्डकट केश राशि बिनु तेलक हवा मे उड़िआइत, ठेहुन पर माथ झुकेने जेना कोनो अभिसारिका अपन प्रेमीक प्रतीक्षा मे बैसल हो। हुनका अपना आंखि पर सन्देह भेलनि त जेबी स अपन जीड़ो पावरक चश्मा बहार क पहीर नीक जकां देखलनि।

—हलो मिस्टर बैताल !

—अरे ! विक्रमादित्य तों ? कह की हाल-चाल ?

– भाइ बड़ पैघ समस्या आबि गेलए।

—समस्या !

—हं, सभ विरोधो-ए भ गेलए। समस्त जनता हमरा विरोध मे संगठन केलकए। ओ सभ हमरा विरोध मे सभा करै-ए, नारा लगबैए आ हमरा सत्ताच्युत कर चाहैए। हम त आब नीक जकां घुमियो-फोरि ने सकै छी।

—ओ ! समस्या त ठीके पैघ छैक किन्तु घबरेबाक प्रयोजन नञि। हम त छीहे।

—मिस्टर बैताल अपन पाइप धड़ौलनि आ दुकन्हा पर जा क बैसि गेलाह। विक्रमादित्य सेहो जेबी स बोतल निकालि एक घोंट देलथिन आ पुनः सिगरेट लेसलनि।

– मिस्टर विक्रमादित्य ! आब त तों बोतल-सेवन सेहो करै छ तखन ई साधारण समस्या स घबड़ायब।

—आखिर बात की छइ से नञि बुझल मोता। डाक्टरक परामर्श स स्वास्थ्य रक्षार्थ एकर शरणागत भेल छी हम।

—खैर बात जे होउक। ध्यान स सुनह। आइ हम तोरा ओही डाक्टर व्यास विरचित 'बृहदारण्य पुराण' क एगो लघुकथा सुना रहल छियह—

—खिस्सा !

—हं, हमरा आशा अइ जे तोहर समस्याक समाधान ओकरा द्वारा भ जेतह। पहिने आब एगो समाचार द दियह—मिस्टर व्यास के सहित्य-शिरोमणिक उपाधि हाले मे भेटलनि हैं।

—ओ कि जिबिते छथि ?

—भारतीय दर्शनक अनुसार आत्मा अमर होइछै ने। खैर आब कथा सुनह। एकर शीर्षक थिक 'बिप्लव'।

—सी० बी० आइ० प्रधान कौआ कुमार कानगोइ जंगलाधिपति श्रीमान १०८ शेर सिंह के समाद देलकनि जे समस्त बनैया जानबर मिलि क एगो संघक स्थापना केलकए आ सब दिन कोनो ने कोनो मिटिंग करैए। जनता के सरकारक विरोध मे भड़काओल जाइए। सरकारक सभ दोखक भंडा-फोड़ क चुकलए। शेर सिंह के तकर बाद उकासी बन्न। सात दिन तक अपन गुफा गह्वर स बहारो नञि भेलाह। कौआ दिनानुदिनक समाद कहि जाथिन। मुदा भूख स छटपटाय लगलाह त एक दिन अपन प्राइवेट सेक्रेटरी चमचा प्रधान श्रीमान शृगाल शर्मा आ कौआक संग विचार-विमर्श केलनि। दोसर दिन प्राते एगो बकरी के 'किडनैप्ड' क लेल गेल। सांझ होइत-होइत ई खबरि समस्त जंगल मे दावानल जकां पसरि गेल। दोसर दिन समाचार पत्र सभ मे सेहो छपल आ सांझखन विराट प्रोसेशन बहार भेल राजभवन दिस। जखन राजभवन लग पहुंचल त शेर सिंहक अवस्था शोचनीय। काटू त खून नञि। ओ अपन प्राइवेट सेक्रेटरी आ कौआ स विचार केलनि आ तदनुसार श्रीमान शृगाल शर्मा उपस्थित भेला प्रोसेशनकारीक समक्ष आ कनि-ए कालक बाद मुस्किआइत शेर सिंहक लग हाजिर भेलाह। तुरन्ते 'किडनैप्ड' कएल बकरी के आनल गेल आ शेर सिंह

ओकरा गरदनि पर प्रहार केलनि। टटका रक्त-मांस स उदर भरि चैन त राति भरि सुतलाह। तकर बाद स रोजाना एक दू गोट बकरी, हरिणक हरण होइत रहल आ बिरोधी सभ 'प्रोसेशन' बहार करैत रहल। कहियो श्रृगाल आ कहियो शेर सिंह स्वयं ओकरा सभक समक्ष उपस्थित भ भाषण द स्मार-पत्र ग्रहण करैत रहलाह। कहियो काल कोनो चमचा के प्रधान बना कोनो कमीशन बैसा देल गेल-हरण वा मरण केसके जांच करबाक निमित्त। सी० बी० आइ० क कार्य व्यस्तता बढ़ि गेल। शेर सिंह चैनक बंसुरी टेरैत रहलाह। ई क्रम चलैत रहल।

बाह मोता बाह। कमाल के कथा कहलह। हमरा त ओइ डाक्टर ब्यास के लेखनी चुमि लेबाक इच्छा होइए—विक्रमादित्य पोन झाड़ैत बजलाह।

सत्त पैघ डिगरी ओहिना नवि भेटै छैक योर आनर।

हमरा विचार अइ जे हुनका एक दिन बजा प्रीतिभोज देल जाय। एखन हमरा स्टाक मे भेट ६९ आ ओल्ड स्मगलर पर्याप्त अइ।

परंच दुखक बात ई छेक जे ओ देबलोक मे छथि आ देवगण हुनका छोड़ि नवि सकैत छथिन।

तखन?

तखन किछु नवि। तोरा अपने राज मे ब्यासक खोज करबाक छह आ ओकरा दरबार मे सम्मानक संग नोक तनखा पर नियुक्ति करबाक छह। पद राष्ट्रकविक बना सकैत छह।

राइट यू आर मोता! जानथि बाबा बैद्यनाथ जे झूठ कहैत होइयह। हमरा पूर्ण विश्वास अइ जे ई बुद्धि 'इण्डियन ब्रेन' मे नवि अबि सकैए। तोरा 'इम्पोर्टेड ब्रेन' प्राप्त छह।

खैर, देरियो स चिन्हलह त। अच्छा हम एखन चलो। कैकटा काज अइ।

बेश।

आ कासर्दन केलाक बाद बेताल एक दिस आ डांर लचकबैत बिक्रमादित्य दोसर दिस बिदा भ गेलाह।

———

ब्रह्माक श्राप

आ बेताल राज कथा आरंभ केलनि—कथाक नाम भेल 'ब्रह्माक श्राप'।

एक खेप एहन भेल जे देवराज इन्द्रक अत्याचार-अनाचर सं तंग आबि प्रधान प्रधान देव-ऋषिगण हुनका विरुद्ध गुरू बृहस्पतिक अदालत मे मामला डारि केलनि। हिनका लोकनिक ओकिल रहथिन ब्रह्मर्षि विश्वामित्र। ओ अपन मोक्किल दिस सं अभियोगक तालिका प्रस्तुत केलनि जे एना छल · रौदी दाही सं त्राण पेबाक लेल आइतक सरकार द्वारा कुनू काज नहि कएल गेल ए फलतः प्रतिवर्ष कतौ रौदी त कतौ दाही होइते रहैछ आ अन्नक अभाव मे सभठाम हाहाकार मचल अइ। सभ बर्ख कागजपर योजना बनैए परंच कार्यतः किछु भ नहि रहल - ए। दानव लोक सं कर्ज मे गहुम ल क खाइत खाइत लोकक मानसिक स्थिति बिगड़ि रहलै - ए आ लोक सभ विपथगामी भ रहल ए। धर्माचारक समस्त बाट बन्न भ जेबाक कारणे लोक पापाचार लीन भेल जा रहल ए। स्वयं देवराज इन्द्र नारी आ मदिराक पांछा मत्त रहैत छथि। सैनिक जकर काज देवलोक के दानवी आक्रमण सं रक्षा केनाइ थिक - से देवलोकक नागरिक पर अत्याचार करै - ए आ तकर मात्रा दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक। देवराज इन्द्र अपन बेटाक नामे बिराट कारखानाक निर्माण केलनिहें सँगहि बेटा-पुतोहुक नामे पाताल-लोकक बेंक मे कोटियो टाका जमा क चुकल छथि। एकर अतिरिक्त अन्यान्य व्यक्तिगत स्वार्थपूर्तिक निमित्त सतत राजशक्तिक उपयोग कएल जा रहल - ए।

एतबा कहि महर्षि विश्वामित्र बैसि जाइत छथि आ तेखन उठैत छथि देवराजक ओकिल विश्वकर्मा। ओ आरंभ करैत छथि—योर आनर, विरोधीदलक ओकिल जे सभ आरोप हमर क्लाइन्ट पर लगओलनिहें से सभ निराधार थिक आ तकर कारण मात्र व्यक्तिगत द्वेष थिक। योर आनर नोट कएल जाय जे देवराज इन्द्रक यश चतुर्दिक पसरि गेल-ए आ तीनू लोक मे हुनम यशोगान भ रहल-ए, हुनक बुद्धिमत्ता आ कार्यक्षमताक प्रशंसा भ रहल-ए, तें विरोधी लोकनि के डाह होइत छनि। देवराजक कार्यकाल मे देश कते प्रगति केलक-ए तथा एकर प्रतीष्ठा कतेक बढ़लै-ए, हम तकर किछु उदाहरण राखि रहल छी। योर आनर देवलोकक कतेको रास्ता-पेड़ाक नाम देव-ऋषिक नाम पर राखल गेल-ए। राजधानीअमरावती कें सरिपहुं स्वर्ग बनाओल गेलए जतय बारहो मास छतीसो दिन वसन्त विराजमान रहैछ आ जकर शोभा देखिते बनैछ। दिनानुदिन बढ़ैत जनसंख्या के रोकबाक लेल जन्म-निरोधक आइन बनाओल गेल-ए। सभ कें समान सुख-सुविधा उपलब्ध होइक तें आइन बना सप्तर्षिक अधिकार मे कटौती कएल गेल-ए। आधुनिकतम वज्रक आविष्कार कएल गेल-ए जाइ सं अपर लोक मे हमर प्रतिष्ठा बढ़ल-ए। संगहि विदेश नीति मे लाभजनक परिवर्तन भेल-ए। तें विरोधी दलक आरोप जे देवराज इन्द्र देश आ देशवासी लेल किछु नहि केलनिहे—एकदम स निराधार अछि।

एहि तरहे कतेको दिन तक केस चलैत रहल आ पक्ष-विपक्ष मे दलील देल जाइत रहलैक। अन्त मे प्रधान न्यायाधीश देवगुरु बृहस्पति आन-आन अभियोग कें अनठा मात्र राजशक्तिक अनुचित उपयोगक अपराध मे इन्द्र कं दोषी ठहरओलनि। ओना एहि फैसला सं इन्द्र पर कुनू प्रभाव नहि पड़लनि आ ओ पूर्ववत अपन पद पर आसीन रहलाह जखन कि देवलोकक आचार संहिताक अनुसार दोषी ठहरबाक कारणे हुनका इस्तीफा द देब आवश्यक छलनि। हुनक दिनचर्या सेहो पहिने सन रहल। अन्त में विपक्षी लोकनि आन्दोलनक धमकी देलथिन। देवराज आन कुनू पथ

नहि देखि सभ कें जहल मे ठूसि देलनि आ सम्पूर्ण मंत्रीमंडलक क्षमता अपना हाथ मे ल लेलनि। आकाशवाणीक संगहि समस्त प्रचार यंत्र सं दिवा-रात्रि हुनके जयगान-यशोगान होमय लागल। ठीक एन मओका पर वृद्ध ब्रह्मा फारेन टूर सं फिरलाह त अमरावतीक एयरपोर्ट पर नारद कें छोड़ि ककरो नहि देखि अचरज भेलनि। बाट मे जखन नारद द्वारा सभ बात ज्ञात भेलनि त ओ नारद कें कारागार पठा अपने ओही टैक्सी सं सोझे इन्द्रालय पहुंचलाह। सांझ पड़ि गेल रहैक। इन्द्रक दरबार मे महफिल जमल छलैक। स्वयं देवराज दहिना हाथ मे मदिराक गिलास आ बामा हाथे एक श्वेतांगीक डार पकड़ने, मुँह मे पाइप, डान्स करैत। ब्रह्मा कें त देखिते तरबाक लहरि टिकासन पर चढ़ि गेलनि। ओ बम-कलाह—इन्द्र !

—हेलो डीयर ओल्ड सृष्टा ! गुड इवनिंग। गुड, बेरी गुड इवनिंग टु यू।

इन्द्रक मुँहें म्लेच्छ भाषाक प्रयोग ब्रह्माक कान मे टहकैत तेल जकां बुझेलनि। ओ फेर गरजलाह—ई की भ रहलए ?

नथिंग गुरुदेव। असल मे अपने बुढ़ भेलहुं ने तें मन नहि होएत। आइ हमर 'बर्थ-डे' थिक ने—तकरे पार्टी। ई लोकनि हमर गेस्ट छथि। दे आर आल फारनर्स। अपने कें परिचय करा दी। परंच—जेना इन्द्र के किछु मन पड़लनि ओ दोसर दिस घुरि आवाज देलथिन—वेटर ! एक बड़का ओल्ड स्मगलर आ एगो चिकेन टिक्का कबाब फॉर आवर ओल्ड सृष्टा। जल्दी। आ हं—एक पैकेट स्टेट एक्सप्रेस ५५५। बेचारे ब्रह्मा त तामसे माहुर भ रहल छलाह परंच तैयो शान्त स्वरे बजलाह देखैत छी जे सोमरस तोरा पर अपन बेस प्रभाव जमा चुकलए।

ह्वाट ! ड्रींक्स हाउ फन्नी ! अपने भरिसक बिसरि गेल छी जे ई राजा-महाराजाक खानदानी पेय थिक आ ताहू पर हम त जन्मक पूर्वहि सं एकर अभ्यस्त छी। हमर स्वर्गीय पितृदेव सेहो नीक पीबाक छलाह। हमर बाबा।

—तों अपन बकावास बन्न करह। हमरा सभ पता अइ। देवगण आ ऋषिगण कहां छथि ?

—हाउ कैन आइ से ? ई बजैत आ तलमलाइत ओ ब्रह्माक लग पहुंचलाह आ चुरुठक एक पैघ कश खीचि एक लोइया धुँआ ब्रह्माक मुँह पर निक्षेप केलनि। बुढ़ ब्रह्मा दुनू हाथें ओकरा हटबैत पाछू हटलाह आ ताही क्षण नारद जो महाराज समस्त देवऋषिक संग हाजिर भेलाह। हिनका लोकनि कें देखिते देवराज इन्द्रक सभ नशा छू मन्तर भ गेलनि। ओ कर जोड़ि मिनतीक स्वर मे बजलाह - सर ! हमर कुनू दोष नहि। विश्वास करू हिनका लोकनि कें बुढ़ हेबाक संगहि बुद्धि सेहो भासि गेल छनि। तें त हम कहैत छियनि जे हमरे जकां मओज-मस्ती करू जे सभ दिन जबाने रहब। परंच ई लोकनि उनटे हमरा गारि पढ़ैत छथि आ हमर स्वर्गीय पिताक नामे यत्र-तत्र कुप्रचार करैत छथि। सर ! अपने त सभ जनैत छी जे हम अपन जन्मक पूबहिं सं एहि देश आ देशवासीक सेवा करैत आयल छी। नेनहि मे अपन पिताक संग विभिन्न लोकक भ्रमण केने छी। हमर स्वर्गीय पिता सेहो एहि देशक हेतु की-की ने केने छथि। हमर देवतुल्य बाबा।

ब्रह्मा फेर इन्द्र के चपटलनि त ओ थरथर कापय लगलाह। एमहर देव ऋषि-गण असहाय भेल तमसायल ब्रह्मा कें देखि रहल छलाह। ब्रह्मा बेस शान्त स्वरे हुनका लोकनि दिस देखि बजलाह—देव ऋषिगण ! अहां लोकनि हाथ रहितो कहियो तकर उपयोग नहि कएल, पौरुष नहि देखा ओल-तें आइ सं नपुंसक भ जाउ। अहां लोकनि सभ दिन एहिना विरोध मे चिचिआइत रहब, जहल जाइत रहब। जे हेतु स्वार्थ जनमि गेलए तें लोक के व्यर्थ ठकबाक प्रयास करैत रहब परंच स्वार्थक पूर्ति कहियो नहि भ पाओत। आ ओ अपन कमंडल सं एक चुरुक पानि ल कें हुनका लोकनि पर निक्षेप केलनि ओ भो, वेलडन वेलडन कहि इन्द्र खुशी सं नाचय लगला परंच ब्रह्मा कें अपना दिस फिरैत देखि कंपनो ध लेलकनि जेना माघक बदरी मे प्रातःस्नान केलाक बाद होइत छैक ओ करजोरि के अनुनय स्वर मे बजलाह—सृष्टा, फॉरगिव मी। अहींक सप्पत हम निर्दोष

छी। तथापि कान पकड़ै छी जे एहन भूल कहियो ने करब। नेवर इन माइ लाइफ आइ प्रोमिस। ई बजैत ओ कान पकड़ि उठ-बैस करय लगलाह। ब्रह्माक गंभीर गर्जन भेल—इन्द्र !

—श्रीमान माइ-माप

—तोरा मे साहस छौक तें तों सभ दिन शासन करैत रहबें। ओना अगिला पीढ़ी तोरा बलजोरी कान पकड़ि सिंहासन सं हेट क देत आ केश काटि, मुंह मे कारी चूनक टीका लगा, चानि पर खापरि राखि, गर्दभासीन क कें अमरावतीक प्रधान प्रधान पथ पर प्रक्रिमा कराओत। समस्त देवलोक अपर लोकक निवासी तोरा दूर छीया करत। अन्त मे तोहर सन्तानो तोहर अपमान करत, गारि गंजन देत। बाध्य भ ओकरे सं समझओता करबें आ ओकरे इशारा पर चलबें। एतबा सुनिते देवराज त्राहि-त्राहि क कें ब्रह्माक चरण पर खसि पड़लाह। आंखि स दहोबहो नोर बहय लगलनि। ब्रह्माक हृदय द्रवित भ गेलनि। ओ अपन श्राप मे एमेन्डमेन्ट केलनि। देख, ओनाहमर श्राप त व्यर्थ जा नहि सकैछ। तखन एहि लोक मेनहि, बीसम शताब्दी मे तों मनुखक जोनि मे जन्म लेबें। देवराज हेबाक कारणे तोहर जन्म पवित्र भूमि आर्यावर्त मे होएत। तखन म्लेच्छ भाषाक नीक जकां प्रचार प्रसार रहतैक आ स्वभावतः ओ तोहर खानदानी भाषा रहतौक। नारी मे अतिशय आशक्ति रहबाक कारणे तों नारी रूप मे जन्म लेबें। ई कहि ओ भरि चुरुक पानि इन्द्र पर निक्षेप केलनि। आकाशवाणी सं साधु साधु ध्वनित भेल आ सुमन बृष्टि होमय लागल। ब्रह्मा प्रस्थान केलनि आ इन्द्र माथ पर हाथ धेने बैसि रहलाह।

—महाराजा विक्रमादित थपरीक संग वाह वाह करय लगलाह। —सरिपहुं अनमोल कथा सुनओलह मीता। परंच एकर रचयिताक नाम त नहि कहलह ?

—रचयिता तोहर परिचिते डा० व्यास छथि। हुनका छोड़ि दोसर के एहन सुच्चा साहित्यक सिरजन क सकैछ ?

एतवा कहैत बेतालराज अपन गर्दभ विमान सं विदा भेलाह आ महाराज विक्रमादित्य अपन प्रिमियर पद्मिनी गाड़ी स्टार्ट करय लगलाह।

उत्तर महाभारत

बेतालराज दुकन्हापर बैसल-बैसल बोर भ रहल छलाह आ महाराज विक्रमादित्यक पता ने। ओना ई त हुनक अभ्यासे छलनि जे विलम्ब सं अओताह आ दिस-दैट, हेन-तेन कारण कहि देताह। बेचारे बेताल के चुरुटक अमल लागल छलनि। दियासलाइ सठल छलनि आ सगरो खोजलाक पश्चातो नहि भेटल छलनि। असल मे एना हठात् बजार सं सलाइ निपत्ता भ गेनाइ सभ के अचरज मे द देने छलैक। सभ सभ तरहक अनुमान लगा रहल छल। केओ सोचैत छल जे फेर भरिसक दाम बढ़तैक कारण बजट सेशन चालू छैक त केओ सोचैत छल जे हो न हो फारेन करेन्सीक लोभ मे एकरो एक्सपोर्ट भ रहल होएतैक। एमहर बेताल सोचैत छलाह जे कखन महाराजक पदार्पण होएत। हुनका संग मे चाइनीज लाइटर हेबे करतनि आ ई अपन चुरुठक अमल शान्त करताह।

बेतालराज सामने तकलनि त देखैत छथि जे दुनू हाथ मे दू गोट बोतल पकड़ने मुँह मे मिझायल बीड़ी तलमलइत महाराज विक्रमादित्य पधारि रहल छथि। ओ निचा उतरैत स्वागत् केलथिन आ नव वर्ष शुभकामना जनओलथिन—नव वर्षक अहांक लेल नव हो।

महाराज विक्रमादित्य बेताल दिस तकैत बजलाह—जं नीक मन सं कहने छ त कुनू बात ने। जं बेजाय मन स कहने होइ त ई तोरा लेल नव हो तोरा जिनगी मे आबय बला सभ वर्ष नवे हो।

बेताल सोचलनि जे महाराज मूड मे छथि। ओ हुनका गछक जड़ि

मे बैसा देलथिन आ लाइटर जेबी सं बहार क क दुकन्हापर चढ़ि गेलाह। चुरुठ लेसैत आ एक दम खीचैत पुछलथिन—मीता! जीड़ो आबर कि शेष नहि भेलैक ए?

महाराज बोतले मुँह मे लगा गट-गट कें थोड़े पेटस्थ केलनि आ एक दम बीड़ीक सोंटैत आ खखास करैत बजलाह—बेताल सरिपहुं तो भरि जीनगी बेताले रहि गेलह। कुनू ताल मेल नहि। राति तों हमरा लोकनिक संग नहि देलह तकर काफी कचोट अहि हमरा मन मे। ओना आइ नव बर्खक पहिला दिन छैक तें हम झगड़ा नहि करब। तो जनैत छह जे हम फ्रैंक आदमी छी। रहल गप्प बोतलक। से जखन नव शिशुक जन्मोत्सव सात दिन धरि चलैत छैक तखन एत्ते टा बर्खक जन्मोत्सव कि मासोदिन धरि नहि चलि सकै-ए?

—कम स कम नओ मासधरि चलबाक चाही। आ तखन बांकी बचत तीन मास। आ कहबी छैक जे छओ मास ऋतु आगे धाबय। तं फेर आबै बला बर्खक उपलक्षय मे तीन मास पहिने सं उत्सव। आ एहि तरहें महाराजक हाथ मे बर्खोंदिन बोतल शोभयमान होयत रहत। परंच ई बीड़ी कहिया सं आ कून उपलक्षय मे?

देखह मीता। ओना लोक मानोओ बा नहि परंच मन सं हम छी सुद्धा सर्वहारा। दोसर आइ-कालि सिगरेटक पाकिट पर लिखल रहैत छैक जे सिगरेट पिनाइ स्वास्थ्यक लेल हानिकारक थिक। बेर-बेर ओइ पर नजर पड़ने साइक्लोजिकल इफेक्ट भ सकैछ तें ब्रान्ड परिवर्तन। आर एगो बात छैक मीता, जानथि बाबा बैद्यनाथ जे फूसि कहैत होइ—जे मजा एहि तीनटंगा सूता बीड़ी मे छैक से सिगरेट मे कतय पाबी। देखहक ने कने पीबि क। महाराज एगो बीड़ी बेताल दिस बढ़ा देलथिन।

माफ करिह' मीता। हमरा त नोक वा बेजाय—एके ब्रान्ड चाही। एकहि धर्म, एक व्रत।

तोहर मर्जी। हं, आइ एगो नोक खिस्सा सुनाबह ने। माने धार्मिक कथा। महाभारतक भेने आर नोक।

बेताल राज कें हंसो लागि गेलनि। ओ बिहुंसैत बजलाह—वृद्धा वेश्या तपस्विनी। बेतालक मुंह सं एहन गप सुनिते महाराजक आँखि लाल भ गेलनि। ओ गंभीर स्वरें बजलाह—माने !

मानेः आब बयसो त भेलह। आ तपस्या त लोक बुढ़ाढीए मे ने करै-ए। ओना हमरा आइ मूड नहि छौक कथा-पिहानीक।

अरे मूड त मिनटो मे बनि जेतैक यार। ले एक साँस मे पारकर आधा बोतल। खांटी माल छैक। ई कहैत ओ एगो बोतल बेताल दिस बढ़ा देलथिन। बेताल पड़ले पओलनि। एके निसास मे दू तिहाइ पाा क चुरुठक दम्म टनलनि ओ कथा कहबाक भंगिमा बना आसन जमओलनि। खखास कय कंठ साफ करैत ओ बजलाह—ई थिक उत्तर महाभारत-कथा, तोहर परिचिते डा० व्यास विरचित।

शरसज्या पर पड़ल पड़ल भीष्म पितामह सोचि रहल छलाह जे ओ व्यर्थक अपटी खेत मे मारल गेलाह। हुनका अहि झंझट मे नहि पड़बाक चाहैत छलनि। ने धीया ने पुता अपन पेट त कुकूरो पोसिए लै ए। राजा कौरव रहओ वा पाराडव हुनका कतौ दू रोटी आरामे सं भेटितनि। नहि जं युद्ध मे उतरबे केलाह त निरर्थक सिद्धान्त वादी नहि बनितथि। शिखंडी कें देखि अस्त्र त्याग नहि करितथि। पाण्डव सभ त आरो बड़का अन्यायी अइ।

सें की मीता ? सभ दिन सुनैत आयल छी जे अन्यायी अत्याचारी छल कौरव सभ !

आ तों ताइ सूनल कथा कें ब्रह्मवाक्य मानि लेलह। बाबा वाक्यम् प्रमाणम। अंय हो, आचार्य द्रोण, कर्ण, जयद्रथ आदि महारथी कें कि छल सं नहि मारल गेलैक ? द्रौपदी सन बहसल माउग कतौ भेटतह। कहबी छइ ने जे सैंया भेल कौतबाल आब हम नगटे सुतबै ना। से पाँच टा पति रहथिन तें धरती पर पएरे ने पड़नि। कहू त भला-ओ कतो दुर्योधन कें कहथिन जे आन्हरक बेटा आन्हरे होयत छैक। देओर सं लोक हंसी-

ठट्ठा करितो अछि परंच शसुरक प्रति एहन कमेन्ट। सपरतोब त कम नहि छलनि। आ स्त्रैण छलाह पाण्डव लोकनि। बहुक पक्ष ल कें भइयारो मे मारि-दंगा। हम पुछैत छियह जे कर्ण त भेलाह अवैध संन्तान परंच धर्मराज आ हुनक चारू भाइ कि अपने बापक जनमल रहथिन ? बापे पितीक जन्न केना भेल रहनि ? बाउ कने ज्ञान झाक योग दियौक तखन ने बुझबैक। ई सभ कुनू हमर मन गढन्त नहि थिक, डा० व्यास के भर्सन थिकनि जे सर्वविदित अछि।

तखन त ठोके हेबाक चाही। असल मे मीता हम कने मूड मे छी ने। आगा बहक।

बेताल राज फेर कने मदिरा पेटस्थ केलनि आ चुरुठक दम खिचि धुंआ छोड़ैत आरंभ केलनि—पितामह फेर युद्ध करबाक घोषणा केलनि। तखनो बहुतरास योद्धा सभ कात-करोट मे बांचल छल, बहुतो विदेश मे छल। नारो आ युबक लोकनि छल। ओ सभ कें संगठित क युद्ध करबाक एलान केलनि। जखन ई समाचार पाण्डव दल मे पहुंचल त ओ लोकनि मुह मे धान देथि त लाबा होइन। ता बीच कुटिचाली कृष्ण उपस्थित भेलाह आ हिनकें सलाह सं पितामह के 'बीर-रत्न' सम्मानोपाधि सं विभूषित कएल गेल। आ जेना कि कहबी छैक जे बुढ़ भेने लोक दूरि जाइए सहए हाल पितामहक। ओ किछु दिनधरि त मओन धारण केने रहलाह आ पश्चात् पाण्डव लोकनि कें अनुशासन पर्वक ज्ञान देमय लगलथिन। आये थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास !

अच्छा मीता, ई अनुशासन पर्व वास्तव मे की थिक ? विक्रमादित्य प्रश्न केलथिन-अनुशासन पर्व ओ स्थिति भेल जाइ-मे आइन-कानून आ शासनक नाम पर विरोधी लोकनिके चुप-चाप समूल नष्ट कएल जाय। सर्व साधारण के एकर आभासो तक ने भेटैक। माने तेहन झांप झप नियां जे भाफो ने आबय अंगनिया।

ओ. के. मीता आब उठल जाय।

—कथा नीक नहि लगलह की ?

—एह, कहू त भला। सेहो पुछबाक बात भेलैक ? जानथि दिनकर दीनानाथ, धीयापुता सप्पत, कथा त अपूर्व छैक आ ताइ मे डा० व्यास विरचित।

—तखन भरिसक बोतल खाली।

—असल बात सएह। आ लग-पास मे कतौ भेटनिहारो ने।

—से किएक ने रहतैक। लगे मे पसीबा रहै-ए। परंच से जं तोरा चलैत हो।

—अरे सभ चलैत छैक। तारी ने ?

—हं। आर तोरा त आइ बाहनो नहिए छह। हमही बरू पहुंचा देबह।

आ महाराजक अनुमति ल बेतालराज अनुशासन पर्वक अवसरपर बिशेषरूप सं बनाओल अपन बकरी विमान जोतलनि आ दुनू बन्धु सबार भ पसीखानाक पथपर अग्रसर भेलाह !



अमरावती उपकथा

मासदिनक फॉरेन टूर सं बेतालराज आइए फिरल छलाह आ तें अड्डा-पर पहुंचबा मे बिलम्ब ओना एयरपोर्ट पर लैंड करबाक संगहि ओ टैक्सी पकड़लनि आ डाइरेक्ट अड्डापर बिदा भेलाह परंच बाट ततेक ने जाम छलैक जे आर देरी भ गेलनि। हुनक आजुक पोशाको तेहन छल जे हठात चीन्हलो ने जा सकै छल। खद्दरक धोती-कुर्ता, माथपर खजबा टोपी आ आँखिपर वेश पैघ करिया चश्मा। ई बात फराक भेल जे समय दोसर साँझक छलैक आ अन्हार नीक जकां भ गेल छलैक। अड्डा पर पहुंचिते देखैत छथि जे महाराज विक्रमादित्य कएक टा बोतल खाली क चुकल छथि। ओ गाछक जड़ि मे ओङठल मोहिनी छाप बोड़ी धुकैत मूड मे गाबि रहल छलाह—मेरे सपनो की रानी कब आएगी तु।

बेताल एहि रंग कें भंग करैत महाराजक अभिवादन केलथिन—गुड इवनिंग मिस्टर-मिस्टर १०८ मिस्टर हिज हाइनेस महाराजाधिराज सरताज विक्रमादित्य।

महाराज पहिने त चौंकलाह परंच पारखो हेवाक कारणे चीन्हबा मे देरी नहि भेलनि। ओना बेतालक नव भेष-भूषा देखि अचरज अवस्से भेलनि। ओ शान्त स्वरें जबाव देलथिन जे नीक मन स कहने होअह त तोरो गुड इवनिंग। जं अधलाह मन स कहने छह त तोरा गुड इवनिंग, तोरा बाप कें गुड इवनिंग, तोरा परबाबा के

—नो नो। नो मेंर डीयर। खर्च पर कटौती कएल जाय। दोसर ओ लोकनि ताइठाम पहुंचि चुकल छथि जाय ठाम बेतारो द्वारा खबरि नहि पठाओल जा सकैछ। चौअनियां मुस्कीक संग बेताल कहलथिन।

श्रीमान महाराज विक्रमादित्य माथ उठा कें बेताल दिस तकलनि आ बजलाह-ओह ! केहन दीब मूड बनल छल परंच ई हरासंख सभ बिगाड़ि देलक। बुझि पड़ै ए जेना मालो खांटी नहि हो।

बेताल के हंसी लागि गेलनि आ ओ ठहक्का मारि हंसय लगलाह। महाराज पपनी मिलमिलेलनि आ भौंह तनि गेलनि। ओ चार्जक मुद्रा मे बजला हंसलह किएक ? किछु आँखि देखलह ने की ?

एहि बीच बेताल के तम्बाकू रगड़ल भ गेल छलनि ओ फटाफट थपड़िया कें ठोरस्थ केलनि आ बजलाह—सुनल जाओ महाराज—लोक जं देखैत अछि त आंखिए सं तें ई कुनू युगुतगर प्रश्न नहि भेल। दोसर बात ई जे आब त कुनू इमरजेंसी छैक नहि जे हंसला सन्ता लोक के ऐरेस्ट क लेल जेतैक आ जहल मे बन्न क देल जेतैक। तेसर बात, अपने खांटी मालक बात कएल ए। से जखन आइ-कालि ओहो जन्तु खांटी नहि होइ-ए, जकरा मनुक्ख कहल जाइ छइ, त मालक कथे की ?

—कुनठामक बात कहैत छह ?

—ओहीठामक जकरा देवलोकहुं सं पवित्र भूमि मानल जाइत छैक आ समस्त पौराणिक ग्रंथ मे जकर चर्च नहि गुणगाणो छैक—माने जम्बूद्वीपक भारत खंड।

—तकर माने भेल जे तों ओहीदेशक भ्रमण मे गेल छलाह ?

—निश्चित, निर्विवाद। जकर दर्शन लेल देवताओ सभ लालायित रहैत छथि आ विभिन्न योनि मे जन्म ग्रहण कय एहि पवित्र भूमि पर विचरण करैत छथि, तकरा देखैक लोभक संवरण जं ईहो अधम नहि क सकल त दोखे की ? ओना एहि बात मे कतेक सत्यता छैक से के कहत ? परंच एहन गप ओहि देशक लोक सभ बजैत अछि आ पोथी मे त छैके।

महाराज मूड मे छलाहे। स्वभावतः ओ सोचलनि जे आइ बेतालो मूड मे अइ आ तें एकरों सं नीक कथा सुनल जा सकैए। ओ चट द एगो 'ओल्ड स्मगलर' बेताल दिस बढ़ओलनि। बेताल सखेद आपस क देलनि आ अपन जवाहरकोटक तरका जेबी सं चाकलेट सन किछु बहार कय बजलाह—आइ हमरा लग ओही पवित्र भूमिक पवित्रतम भू-खंड मिथिला देशक पवित्र आ प्रसिद्ध बुटी अइ। ओना जलक अभाव मे इ घोंट त अबस्से ल लेब परंच बेसी नहि।

ई कहैत ओ पन्नी खोलि टप द गोली मुंह मे ध लेलनि आ एगो अधिएलहा बोतल सँ एक घोंट पोबि गुलगुला कें घोंटि गेलाह आ अपन परमानेंट आसन दुकन्हा पर जा कें बैसि रहलाह। फेर कुर्ताक जेबी सं चुनौटी बहार क जुमगर सं तमाकू बनओलनि आ ठोरस्थ केलनि। महाराज अचरज आ जिज्ञासा भरल नजरि सं बेतालक एहि नव आ विचित्र क्रिया-कलाप क अवलोकन करैत छलाह—से बात बेतालो लक्ष्य केलनि। ओ महाराजक जिज्ञासा शान्त करैत लेल बुझबैत कहलथिन—

पहिल बुटी जे हम खायलए ने, तकरा ओहिठामक लोक शंकर बुटी कहैत छैक। ओना आइ-कालिक लोक मे देव-पितरक प्रति आस्था रहलैक नहि आ तें एकर नव नामकरण कएल गेलए—सिद्धी। सिद्धीक माने भेल सकल सिद्धि कें दाता। आ दोसर खेप जे बस्तु हम तरहत्थी पर रगड़ि ठोरस्थ कएलए—से थिक नौलेज पाउडर, यानी ज्ञान अथवा बुद्धिवर्द्धक बटी। एकर नियमित सेवन सं कुशाग्रता, प्रत्युत्पन्नमतित्व, तर्कशक्ति, आदि मे पर्याप्त बृद्धि होइत छैक। ओहिठामक लोक कें एहन दृढ़ विश्वास छैक।

— आ ई पोशाक ?

—हा हा-हा-हा। अपने कें एखन तक सेहो ज्ञात नहि ? महाराज, अपने कहियो इसरगज बन्हने छी ?

—सभ बर्ख बन्हैत छी।

—किएक ?

—सर्प-दंश सं मुक्तिक निमित्त—विधान त इएह छैक।

—राइट यू आर।

— फेर म्लेच्छ भाषा

बुझि पड़ैछ जेना अपने कें जनता सरकार जकां एहि भाषा सं एलर्जी हो। खैर, एहि पोशाक मादे पुछने रही-ने। त सुनल जाय—ई पोशाक पहिरि अपने नेता बनि जाउ। नेता-माने देश-सेवक, लोक-सेवक, ज्ञानवान-बुद्धिमान आ जतबा से इच्छा हो। आ फेर जते अपकर्म-कुकर्म करबाक हो से ठाठ सं करैत रहू। सुरा-सुन्दरीक भोग, स्वर्ण संचय, स्वजन-पोषण आ शत्रु हननक योग। माने जे जे मन हो बिना कुनू दुविधाक क सकैत छी आ अपने विदेह जकां समस्त दोष सं मुक्त रहब। ओना त कुर्सीक स्थान प्रधान छैक परंच दोसर स्थान एकरे छैक। ओना एहि पोशाक आ कुर्सी मे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध छैक। दुनू समगोत्री थिक। तें एहि पोशाक धारी आ कुर्सीक अधिकारी जे केओ किएक ने हो ओकरा मे समानता रहिते छैक मनहि ओकर कार्य पद्धति से कतबो पार्थक्य किएक ने होइक। उदाहरण स्वरूप अमरावतीक पहिलुक शासक आ वर्तमान शासक कें लेल जा सकैक। पहिने गोत्रवाद आ चमचावादक प्राधान्य छल आ आब वर्णवाद आ भाषावादक प्राधान्य छैक। जहाँतक जनताक प्रश्न अइ से जनता थिक बकरी। ओकरा आगा मे कने हरियर

घास अथवा आमक पल्लव ओगारि दियौक ओ अहांक भैट ६६ दिस पपर्नायो अलगा कें नहि ताकत।

— परंच ई नेता लोकनि त लोक कें बड़ आध्वासन देने छलथिन ?

—कारण तखन ई लोकनि कुर्सी बिहीन छलाह। कुर्सी भेटिते बिसरि गेनाइ स्वाभाविक। आब कैसी तेरी रंगा ! दोसर बात जे इहो लोकनि त कुनू ने कुनू रूप मे पुरने दल सं सम्बद्ध छलाह। रक्त सम्पर्कें ओही बंशक छथि ! आ तेसर बात जे बिलाड़ि जं माछक रखबार हो त परिणामक कल्पना सहजहि कएल जा सकैक। ओना एगो काज ई लोकनि खूब जोर शीर सं क रहल छथि। प्रति मिनट एगो क कमीशन बैसा रहल छथि।

—कमीशन माने ?

कमीशन माने कमीशन। यानो कमीशन—देबभाषा मे।

—ओ हं ˙˙ हं कमीशनम्। सएह ने कहल।

महाराज कमीशनक अर्थ बुझने होथि वा नहि परंच, बुझवाक बहन्ना अवस्से केलनि, जे बेताल के बुझै मे देरी नहि लगलनि। महाराज फेर प्रश्न केलथिन—परंच एहि कमीशन माने कमीशनम् केर प्रयोजन ?

प्रयोजन ! विरोधीक ! सेफाया। आरकी विरोधी नहि रहने नपुंसक जनता सं तख्ता पलटल हेतैक नहि।

बुझि पड़ै-ए जे तोहूँ पूर्वाग्रह व्याधि सं ग्रसितछह। हमरा विचारे ओहिठामक जनता कें केओ निश्पक्ष लोक नपुंसक नहि कहि सकैछ। दोसर आजादीक नामे ख्यात एहि बेरक घटना जनगणक जागरूकताक प्रत्यक्ष प्रमाण थिक। ओकर स्वाधीनताक प्रति आगाध प्रेम तथा अपन शुभचिंतक के चीन्हबा पर संदेह किन्नहुं नहि कएल जा सकैछ।

बेताल राज तमाकू थुकरैत बजलाह—देखल जाय श्रीमान् ! ओना त अपने जे कहबैक से सत्य हेबेटा करतैक जेना कि ओइ देशक नेता लोकनि जे बजैत आ करैत छथि—सभ उचित विधिसम्मत तथा देश आ लोक—कल्याण कारी होइत अइ। परंच सत्य त ई थिक जे लोक भेंडिया घसान होइए। एगो छोट अंश कें जे अपन बाट अपनहि सिरजैत अगुआ रहल-ए जं छोड़ि देल जाय त बाँकी जनता अपन शुभचिंतक के मिसियो भरि नहि चिन्हैए। ई एगो विडम्बना छइ या समयक चालि कहि सकैत छी जे लोक अपन एगो शत्रु के क्षमताच्युत केलक आ ताही लाथें दोसर शत्रु क्षमता हथिया लेलकै। रहल गप स्वाधीनता के से जनता एखनो इ नहि बुझै-ए जे

स्वाधीनता कून चिड़ैक नाम थिक ? देश की आ ककर छैक ? ने तं एक दिस लोक कें पीबै लेल स्वच्छ पानियो ने भेटैत छैक ताहीठाम अमरावतीक शोभा दिन दुन्ना राति चंगुन्ना बढ़ि रहल ए। पहिनहुं समस्त कार्य मे आदिशक्ति लालपरीक दोहाइ देल जाइत छल, दधीचिक नामोच्चार कएल जाइत छल, आइयो तहिना भ रहल ए।

—लगै-ए जे तोरो सिद्धि प्राप्त भ गेल छह। कहाँ चर्च भ रहल छल जम्बूद्वीपक भारत खंडक आ कहाँ स आबि गेल अमरावती आ ताइ पर सं लाल परी।

बेताल बिहुंसैत बजलाह—महाराजन सिद्ध त हमरा प्राप्त भेले अछि आब देखाचाही जे अपने कें कहिया धरि प्राप्त होइछ। अपने जं कने ज्ञान झाक योग द क देखिऐक त सब बुझि जेबैक। भारत खण्डक राजधानी आइ कालि अमरावतीक नामे ख्यात अछि आ ओहिठामक रहनिहार अपना के देवतुल्य बुझैत अछि। लोकक प्रयोग अमरावती सं बाहर रहनिहारक लेल कएल जाइछ। बोतल मे एखनी प्रचुर माल बचल अइ कने पेटस्थ करल जाओ तखन लालपरी कें चीन्हबा मे सेहो भाङठ नहि रहत। ओना अपनेक सुबिधार्थ हम व्याख्या कए रहल छी—आइ सं बर्ख तीसेक पहिने जखने देबसुर संग्राम मे देवगण विजयी भेलाह आ असुरगण पड़ा गेल तखन पाँचोपुर सं पवित्र माटि आनि, देश आ देश वासीक कल्याणार्थ परम दक्ष शिल्पी द्वारा एहि आदिशक्ति लाल परीक विशालकाय प्रतिमाक निर्माण कराओल गेल आ अमराबतीक प्रमुख आलय मे प्रतिष्ठापित कएल गेल। आबत एहि प्रतिमाक नाना रंगक नकल जहाँ-तहाँ पायोल जाइ-ए। आ हमरा जनतबें देश आ देशवासीक लेल सभसं पैघ घातक इएह लालपरी थिक जकरा बले देशक मुष्टिमेय लोक मनमौजी करै-ए आ मोछपर ताव फेरै ए। तें जाधरि एकर विनाश नहि हेतैक ताधरि देश जनक कल्याण असंमव छैक।

—आ दधीचि !

—दधिचि ओ भेलाह जे देबगणक विजय लेल अपन अस्थिधरि दान क देल। ओही अस्थि सं ने महाबज्रक निर्माण भेल छलैक। भरिसक बेचारे सोचने छलाह जे देवगणक द्वारा हुनक देश आ देशबासीक कल्याण संभव होएत। जं बेचारे के पता रहितनि जे हुनक अस्थि सं बनाओल अस्त्र हुनके देशबासी पर प्रयोग करल जायत त जानि ने ओ की करितथि।

एहि मध्य बेताल फेर तमाकू चुना ठोरस्थ केलनि आ अपन दहिना हाथ मे बान्हल शिको घड़ी देखलनि त बारह बाजि रहल छलैक। आ चोट्टे दुकन्हापर सं कुदला। महाराज डरे चौंकि गेलाह आ धरफरा कें उठबाक क्रम के कएक झटका खसलाह ता बेताल पकड़ि लेलकनि। महाराज अपन पोन झाड़ैत सहानुभूतिक शब्द मे बेताल सं पुछलथिन - चोट त ने लगलह ?

बेताल कें हंसी लागि गेलनि।

महाराज आगा बजलाह—हमरा त भेल जे ओते उपर सं खसलाह ताइ पर कीदन खा लेने छलह। तें ने हम सतत स्वदेशी चीजक व्यवहार करैत छी।

बेताल खलिया भैट-69 आ ओल्ड स्मगलरक बोतल के निहारैत कहलथिन—नहि राजन. हमर १कनेको चोट नहि लागल। नेने सं कूद-फानक अभ्यासो छो न। स्कूल लाइफ मे कएक खेप हाइजम्प मे मेडल भेटि चुकल अइ। असल मे बारह बाजि गेलैक आ आइ बिमानो नहिये अइ। दोसर घर मे पत्नी आ धीया-पुता सेहो प्रतीक्षा मे होएत।

—बिमानक कून चिन्ता! हम अपन गर्दभ बिमान सं पहुंचा देबह। दोस्तोनी सं सेहो भेंट केनाइ कते दिन भ गेल।

—गर्दभ बिमान आ राजा विक्रमादित्य के।

—नहि बुझलह ? अनुशासन पर्वक अवसर पर विशेषरूप सं बनबने रही। जतय "कुनू सभा-समावेश मे जाइ त एही बिमान सं आ एकरे उदाहरण लोक कें दिऐक। 'गदहा कते अनुशासित जन्तु थिक। कतबो बोझ लादि दियौ, ई कानो ने पटपटाओत। जत कतौ छोड़ि दियोक घास पात खा तृप्त भ जैत। कहियो कुनू माङ वा दाबी नहि राखत। आ स्वभावतः हमर प्रिय पात्र अइ।' ई कहि महाराज बोतलक अवशेष के समाप्त कएलनि।

बेताल कहलनि—बुझि पड़ैए जे तोरो ज्ञान चक्षु जनमि गेलह।

ताबीच महाराज विक्रमादित्य अपन गर्दभ बिमान जोतलनि आ दुनू बन्धु ओहि पर सबार भेलाह। महाराज गदहाक लगाम धेने टिकटिक ओलनि आ गोत गाव लगलाह-चल चल-चल मेरे हाथी, ओ मेरे साथी।

—